विचार बिन्दु

जो काम घड़ों जल से नहीं होता उसे दवा के दो घूँट कर देते हैं और जो काम तलवार से नहीं होता वह काँटा कर देता है।

–सुदर्शन

हमारे पास बहुत फुर्सत है!

मिर्ज़ा ग़ालिब ने लिखा था, **;जी ढूँढता है फिर वही फ़ुर्सत कि रात दिन/ बैठे रहें तसव्वुर-ए-जानाँ किए हुए;**। शायद वे बहुत व्यस्त रहते होंगे। अगर वे आज के समय में होते तो उन्हें यह लिखने से पहले कई दफा सोचना पड़ता। आज तो मुझे लगता है कि लोगों के पास फुर्सत ही फुर्सत है।

जितने ज़रूरी काम हैं वे सब निबटाये जा चुके हैं। अगर ऐसा न होता तो ब्रिटेन में हाल में हुए सत्ता परिवर्तन और ऋषि सुनक के वहां का प्रधानमंत्री बन जाने के बाद सोशल मीडिया पर जितनी और जैसी चर्चाएं हुई हैं वे न हुई होतीं। लोगों ने उनकी पूरी वंशावली खोज निकाली, उस पर घोर शास्त्रार्थ किए, यह पता कर लिया कि वे सुबह क्या खाते हैं और शाम को क्या खाते हैं, इतना सब कुछ उनके बारे में जान लिया और बता दिया कि अगर कभी खुद उन्हें भी अपनी प्रामाणिक जीवनी लिखवाने का मन करेगा तो आधार सामग्री के लिए इधर ही देखना पड़ेगा।

सवाल यह है कि एक आम नागरिक के लिए क्या इतनी गहराई में जाने की कोई ज़रूरत थी?

जितना समय लगाकर यह काम किया गया, क्या उतने समय का कोई और बेहतर उपयोग नहीं किया जा सकता था? और यह तो एक ताज़ा उदाहरण मात्र है।

मेरा हमेशा से यह मानना रहा है कि चिंताओं, उलझनों और तनाव से भरे आज के समय में हमें खुश होने का कोई मौका हाथ से जाने नहीं देना चाहिए। हर मौके को आगे बढ़कर लपक लेना चाहिए। यह बात मैं अलग-अलग धर्मों और समाजों के त्योहारों को मनाने के संदर्भ में भी कई बार कह चुका हूं। जब लोग 'हमारा' और 'उनका' नया साल की बात करते हैं तो मैं यही कहता हूं कि बेशक आप अपना नया साल मनाएं, लेकिन 'उनके' नए साल पर भी खुश हो लेने में क्या हर्ज़ है? एक की बजाय दो, तीन या चार बार नया साल मना लेने में संकोच या आपत्ति क्यों हो? इसी तरह अगर किसी का कोई त्योहार या उसको मनाने का तरीका किसी भी वजह से आपको पसंद नहीं है तो आप अपनी पसंद-नापसंद को अपने तक सीमित रखें और उन्हें अपनी तरह से, अपने कारणों से खुश होने दें। उनकी खुशियों पर प्रतिकूल टिप्पणियां करके उन के मनाने में बाधक होने का आपको क्या हक़ है? कोई कैसे अपनी ज़िंदगी जीता है, यह उसको तै करने दें। आप सारी दुनिया का ठेका क्यों लेते हैं? आपको जो खाना है आप खाएं, दूसरे जो खाना चाहते हैं वह उन्हें खाने दें। उनके खाने पर टीका टिप्पणी करने वाले आप कौन होते हैं? इसी तरह अगर भारतीय मूल का एक व्यक्ति किसी अन्य देश में सत्ता के शिखर तक पहुंचा है तो हम सबको ज़रूर खुश होना चाहिए। जो खुश हो रहे हैं उनकी खुशी की पतंग को काटने का आपको कोई अधिकार नहीं है। आपको खुश नहीं होना है, न हों। लेकिन दूसरों की खुशी में बाधक बनने का तो जैसे हमें जुनून है। न जाने कहां-कहां से क्या-क्या बातें खोज कर लाते हैं और ताल ठोक कर कहते हैं कि जो हमने खोजा है वही प्रामाणिक है। है, भाई। वही प्रामाणिक है। लेकिन आप अपनी प्रामाणिकता अपने पास रखिये। किसी को भी इस बात से कोई फर्क़ क्यों पड़ना चाहिए कि ऋषि सुनक का जन्म किस देश में हुआ, उनके माता-पिता कहां-कहां के नागरिक थे, ऋषि क्या खाते और क्या पीते हैं? आपके पास इतनी फुर्सत कहां से और क्यों है कि आप औरों के जीवन, औरों के सोच, उनके बारे में छोटी-मोटी जानकारियों को लेकर विवाद कर रहे हैं? आप मस्त रहिये औरों को भी रहने दीजिए।

मैं बहुत बार सोचने क्या प्रयास करता हूं कि क्या हम शुरू से ही ऐसे हैं या अब हो गए हैं? मैंने जितना पढ़ा और जाना है उसके अनुसार तो हम सबको साथ लेकर चलने वाले और सबकी खुशियों में शरीक़ होने वाले रहे हैं। जिस देश में वसुधैव कुटुम्बकम का विचार रहा हो वहां के लोग भला औरों की खुशियों के प्रति असहिष्णु कैसे हो सकते हैं? बहुत पीछे न भी जाऊं और केवल अपने बचपन को याद करूं तो पाता हूं कि उस समय एक दूसरे के सुख दुख में साझीदार बनने का भाव सर्व व्याप्त था। किसी को किसी और की जीवन पद्धित से कोई कष्ट नहीं था।

याद रखें, हम सबके पास सीमित समय है। दिन में केवल चौबीस घण्टे ही होते हैं। उन्हें इस तरह बर्बाद करके हम जो नुकसान कर रहे हैं, उसके तरफ सबका ध्यान जाना चाहिए। जो समय हमें मिला है, उसका विवेकपूर्ण और सार्थक उपयोग किया जाना चाहिए।

हरेक के प्रति सम्मान का भाव था। मुझे लगता है कि इधर सोशल मीडिया ने हमारी मानसिकता को बहुत तेज़ी से बदला है। बल्कि कहूंगा कि कुछ निहित स्वार्थी तत्वों ने इस माध्यम का अपने एजेण्डा के लिए दुरुपयोग कर हमारी मानसिकता को दूषित और विकृत किया है। सही सोच वाले लोगों की यह बड़ी असफलता है कि वे इस दुष्कृत्य का ठीक से मुकाबला नहीं कर सके हैं और सारा मैदान माहौल को दूषित करने वाले तत्वों के नियंत्रण में आ गया है। एक पूरी पीढ़ी ऐसी तैयार हो गई है जिसे इस सोशल मीडिया का भयंकर चस्का लग गया है (या लगा दिया गया है!) और यह पीढ़ी दिन रात इधर से आए संदेशों को उधर करने में जुटी रहती है। कहना अनावश्यक है कि इन संदेशों में से बहुत सारे बहुत योजनाबद्ध रूप से, उसी छिपे हुए एजेण्डा को पूरा करने के लिए रचे और प्रसारित किये जाते हैं। यह नई गढ़ी हुई पीढ़ी अब इन संदेशों के लिए पूरी तरह अनुकूलित हो चुकी है और इसके मन में ऐसे संदेशों के प्रति अविश्वास या संशय का कोई भाव है ही नहीं। जैसे ही कोई विघटनकारी बात सामने आती है, यह पीढ़ी उस बात को आगे फैलाने के लिए व्याकुल हो उठती है। आज अन्य समुदायों के प्रति जिस तरह का वैमनस्य का भाव देखने को मिलता है वह कुछ समय पहले तक अकल्पनीय था। कहने की ज़रूरत नहीं कि यह सब सोच समझकर किया गया है और हममें से जो नासमझ हैं, और दुर्भाग्यवश जिनकी संख्या बहुत बड़ी है, वे इस दुर्भावना और वैमनस्य के वाहक बन कर यह मुगालता पाले बैठे हैं कि वे कोई बहुत बड़े परोपकार का काम कर रहे हैं।

ऐसे लोग सोशल मीडिया के, बल्कि कहें, उसके ख़ास स्वरूप के ऐसे व्यसनी (एडिक्ट) हो गए हैं कि उन्हें अपने होने की सार्थकता ही इसमें और केवल इसमें नज़र आती है। जैसे ही उन्हें कोई संदेश मिलता है ख़ास तौर पर दुर्भावनापूर्ण संदेश, उनकी उंगलियां उसे आगे ठेलने को बेचैन हो उठती हैं। लगभग मुफ्त का इंटरनेट उनके लिए समय बिताने का बहुत बड़ा सहारा बन गया है।

ऐसे लोग कभी यह जानने का प्रयास नहीं करते हैं कि प्राप्त जिस संदेश को वे आगे ठेल रहे हैं वह प्रामाणिक भी है या नहीं। उनके लिए आया हुआ हर विभेदकारी संदेश सच्चा ही होता है। ऐसे लोगों को अगर आप समझाने का प्रयास भी करें तो वे समझने को तैयार नहीं होते। आप उनके सामने चाहे कितने ही प्रामाणिक स्त्रोत रख दें, वे मानेंगे तो उसी को जो उन्हें वॉट्सएप पर मिला है। वॉट्सएप उनके लिए जीवन का चरम और परम सत्य है।

ऐसे ही लोग फ़ेसबुक जैसे माध्यम पर भी, बिना सामाजिकता के मूलभूत सिद्धांतों की परवाह किए किसी से भी लड़ने भिड़ने को तैयार रहते हैं। मैंने कहा न, एक पूरी पीढ़ी ऐसी गढ़ डाली गई है जिसके लिए आपसी वैमनस्य ही जीवन का एकमात्र सत्य है। इस पीढ़ी के लिए पारस्परिक सद्भावना का कोई अर्थ नहीं है। इसकी जीवन दृष्टि का निर्माण जिन्होंने किया है, उनका एजेण्डा तो बहुत स्पष्ट और दो टूक रहा है, और उस एजेण्डा को पूरा करने का सुख भी उन्हें हासिल हो गया है। असल में आज सत्ता तक पहुंचने की सीढ़ी पारस्परिक सद्भावना न होकर पारस्परिक वैमनस्य है। और जो लोग इस वैमनस्य को फैलाने के दुष्कर्म में लिप्त हैं उन्होंने बहुत सोच-समझकर लोगों को पढ़ने-समझने से दूर करते हुए सोशल मीडिया की निरर्थकता का आदी बनाया है। आप बस, इस नशे में डूबे रहें। कुछ भी सोचें-समझें नहीं। निरर्थक मुद्दों पर लड़ते-झगड़ते रहें, बेबात पंगे मोल लेते रहें। वे यही चाहते हैं और अपने चाहे को बहुत हद तक करने में सफल भी हुए हैं।

समझदार लोगों के लिए सोचने की बात यह है कि कैसे एक पूरी पीढ़ी को इस नशे के जाल से आज़ाद किया जाए। कैसे आने वाली पीढ़ियों को इस नशे का आदी होने से बचाया जाए! कैसे लोगों को प्रेरित किया जाए कि वे निरर्थक मुद्दों पर अपनी ऊर्जा खपाने की बजाय सार्थक और प्रामाणिक पढ़ें, सही दिशा में सोचें, और समाज को बेहतर बनाने के लिए संकल्पित हों। याद रखें, हम सबके पास सीमित समय है। दिन में केवल चौबीस घण्टे ही होते हैं। उन्हें इस तरह बर्बाद करके हम जो नुकसान कर रहे हैं, उसके तरफ सबका ध्यान जाना चाहिए। जो समय हमें मिला है, उसका विवेकपूर्ण और सार्थक उपयोग किया जाना चाहिए।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

लौह पुरुष सरदार पटेल की जयंती पर विशेष

सरदार पटेल के जीवन की प्रेरणादायक अनसुनी घटनायें

- **नेहरूजी और पटेल के रिश्तों पर इलाहाबाद के कांग्रेस नेता श्री श्याम कृष्ण पांडे के पास एक दुर्लभ किताब 'नेहरू अभिनंदन ग्रन्थ' है**

डा. जे.के. गर्ग

वल्लब भाई का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को हुआ था । संयोगवश नेहरूजी और सरदार पटेल का निधन 75 वर्ष की ऊम्र में ही हुआ था। सरदार 1931 मे कराची में कांग्रेस के अध्यक्ष बने । पटेल भारत के प्रथम उप प्रधानमंत्री एवं गृह मंत्री बने। राष्ट्र लोह पुरुष को उनके 147 वी जन्मदिन पर आदर के साथ शत शत नमन करता है । लौह पुरुष सरदार पटेल के नेहरूजी जी बीच आत्मीयता और प्रेम के बावजूद उनके रिश्तों के बारे में भ्रामक और झूठा प्रचार आजकल जोर शोर से किया जा रहा है ।

नेहरूजी और पटेल के रिश्तो पर सबसे प्रामाणिक दस्तावेज इलाहाबाद के कांग्रेस नेता श्री श्याम कृष्ण पांडे जी के परिवार के पास 715 पन्नो की एक दुर्लभ किताब 'नेहरू अभिनंदन ग्रन्थ' है। इसी किताब के अंदर 14 अक्टूबर, 1949, को लिखा सरदार पटेल का एक पत्र का उल्लेख किया गया जिसमें सरदार लिखते है जवाहरलाल और मैं आज़ादी के सहयोद्धा है और बापू के समर्पित अनुगामी ।

चूंकि हम दोनों इतने गहरे मित्र रहे कि हमारा आपसी प्यार, विश्वास, समय के साथ बढ़ता ही गया। में हमारे परस्पर एक दुसरे दूसरे जानने और हमारी आपसी नजदीकियां, प्रगाढ़ता और हम में भाईयो जैसे स्नेह प्रेम को शब्दों के अंदर व्यक्त नही कर सकता । जवाहरलाल जनता के आदर्श है और जनता के नेता एवं नायक हैं । देश के प्रधानमंत्री को मेरी प्रसंशा की कोई जरूरत ही नही है वो तो एक खुली किताब है । इसी पत्र में सरदार लिखते है कि ये मेरा सौभाग्य है कि मैं जवाहरलाल को सलाह देता हूं । जवाहरात मेरी हर बात पर अमल करते हैं । कुछ आदमी मेरे और जवाहरलाल के बीच मतभेद की झूठी खबर फैलाते हैं पर हमारा एक दूसरे के प्रति अटूट विश्वास है ।

सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कहा की अन्याय का सामना मजबूत हाथों से कीजिये। यदि हम हज़ारों की दौलत गवां दें। और हमारा जीवन बलिदान हो जाए तब भी हमको, हमेशा मुस्कुराते रहना चाहिए और ईश्वर एवं सत्य में विश्वास रखकर प्रसन्न रहना चाहिए । सरदार ने बतलाया था की स्वतंत्र भारत में कोई भूख से नहीं मरेगा। अनाज निर्यात नहीं किया जायेगा। कपड़ों का आयात नहीं किया जाएगा।

इसके नेता ना विदेशी भाषा का प्रयोग करेंगे ना किसी दूरस्थ स्थान, समुद्र स्तर से 7000 फुट ऊपर से शासन करेंगे। इसके सैन्य खर्च भारी नहीं होंगे। इसके सबसे अच्छे वेतन पाने वाले अधिकारी इसके सबसे कम वेतन पाने वाले सेवकों से बहुत ज्यादा नहीं कमाएंगे। और यहां न्याय पाना ना खर्चीला होगा ना कठिन होगा। यह हर एक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वह यह अनुभव करे की उसका देश स्वतंत्र है और उसकी स्वतंत्रता की रक्षा करना उसका कर्तव्य है. हर एक भारतीय को अब यह भूल जाना चाहिए कि वह एक राजपूत है, एक सिख या जाट है. उसे यह याद होना चाहिए कि वह एक भारतीय है।

सरदार पटेल ने कहा कि मुसलमान भाई अपनी जगह पर रहे, हिन्दू अपनी जगह पर रहें । जो जैसा चाहे अपना मजहब और धर्म को माने और उसका पालन करे । धर्म के नाम पर उनमें कोई झगड़ा मन मुटाव नहीं होना चाहिये । इस मुल्क में रहने वाला हर इन्सान सबसे पहले वो हिन्दुस्तानी है। यहाँ कोई गैर नहीं है। गांधीजी की हत्या के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को प्रतिबंधित करने का आदेश लोह पुरुष पटेल ने ही दिया था । आजादी के बाद भारत को एक एकीकृत राष्ट्र के निर्माण में सरदार का अमूल्य योगदान रहा ।

सरदार पटेल के जीवन की कुछ प्रेरणादायक अनसुनी घटनायें

बालक पटेल अपने किसान पिता के साथ खेत पर जाया करते थे । एक दिन पटेल के पिताजी हल चला रहे थे वहीं अपने पिता के साथ चलते चलते बालक वल्लभ पहाड़े याद करते जा रहे थे उनके पांव में कांटा चुब गया परन्तु बालक पटेल पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा और वो तो पहाड़े याद करने में तल्लीन थे ।

अचानक उनके पिताजी की नजर अपने बेटे के पांव पर पड़ी तो फौरन अपने बैलों को रोककर वल्लभ के पैर से कांटा निकाला और घाव पर पत्ते लगा कर खून को बहने से रोका। अपने नन्हें पुत्र की अध्ययन के प्रति एकाग्रता देखकर वो बहुत खुश हुए और उन्हें जीवन में कुछ बहुत बड़ा काम करने का आशीर्वाद दिया। सरदार ने यह बात मन में ठान ली कि जीवन में इस तरह के बहुत से कांटे और मुसीबतें आती रहेगीं किन्तु उनके दर्द की परवाह नहीं करते हुए मुझे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिस निरंतर करती रहनी है।

कर्तव्यपरायणता को सर्वोच्च मानते थे

हमारे सरदार सन् 1909 में वकील सरदार एक केस में कोर्ट के अंदर पैरवी कर रहे तभी सरदार पटेल को अपनी पत्नी की मृत्यु का तार मिला। पढ़कर उन्होंने पत्र को अपनी जेब में रख लिया मानो जैसे कुछ हुआ ही नहीं। दो घंटे तक लगातार बहस कर उन्होंने केस जीत लिया ।

बहस खत्म हो जाने के बाद जज साहिब वह अन्य लोगों को यह खबर मिली कि सरदार पटेल की पत्नी का निधन हो चूका है तब जज साहब ने सरदार पटेल से इस बारे में पूछा तो सरदार ने कहा कि उस समय मैं अपना फर्ज निभा रहा था, जिसके वास्ते मुझे फीस मेरे मुवक्किल ने दी थी । सरदार बोले मैं अपने मुवक्किल के साथ अन्याय कैसे कर सकता था ।

डा. जे.के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा जयपुर

देवली में मोक्षधाम के द्वार पर फैली गंदगी

देवली शहर के मोक्ष धाम के प्रवेश द्वार के बाहर फैला गंदगी का आलम।

देवली, (नि स) शहर में शव की अंतिम यात्रा में शामिल लोग भी यहां पड़ी गंदगी और बदबू के ढेर बीच से गुजरने पर मजबूर होते हैं ।

यहां मोक्ष धाम प्रवेश द्वार के बाहर फैली गंदगी के कारण बारह महीनों हालात बद से बदतर बने हुए रहते हैं । जिसकी और न तो नगर पालिका प्रशासन का ध्यान जाता है। और ना ही देवली गांव पंचायत इस ओर ध्यान दे रही है । वैसे तो यह क्षेत्र नगर पालिका के दायरे में आता है । नगर पालिका ने यहां मोक्ष बैकुंठ धाम में कई निर्माण कार्य भी करवाये हैं लेकिन यहां फैली गंदगी को हटाने में नगरपालिका बेहद लापरवाही बरते हुए हैं ।

सवाल यह उठता है कि अगर नगर पालिका मोक्ष धाम के प्रवेश द्वार पर पड़े गंदगी के ढेर को हटाने मैं अपनी जिम्मेदारी नहीं समझती तो फिर बैकुंठ धाम एवं मोक्ष धाम परिसर में निर्माण के नाम पर पालिका ने करोड़ों रुपया खर्च किस नियम के तहत किया ।

देवली शहर के मोक्ष बैकुंठ धाम की कमेटी भी इस गंभीर समस्या पर लापरवाही बरते हुए है । मोक्ष धाम के प्रवेश द्वार पर फैली हुई गंदगी से निजात दिलाने की जिम्मेदारी आखिरकार किसकी बनती है। यह सोच में विषय है । इसलिए कि पालिका प्रशासन, देवली ग्राम पंचायत प्रशासन, और मोक्ष धाम कमेटी संस्था , उक्त तीनो ही एजेंसी अपनी अपनी जिम्मेदारियों से इस समस्या पर पल्ला झाड़ते हुए दिखाई दे रहे हैं।

घड़साना में देर रात नाबालिग की शादी रूकवाई

- **पन्द्रह साल की बेटी की शादी कर रहा था परिवार**
- **अनजान महिला ने फोन कर जयपुर में दी सूचना, परिवार को पकड़ा**

अनूपगढ , (निसं)। श्रीगंगानगर के घड़साना में देर रात एक नाबालिग की शादी रुकवाई गई। जयपुर से पहुंची एक एनजीओ की टीम पुलिस की मदद से नाबालिग के मेहंदी फंक्शन में पहुंची ।

परिवार से बच्ची की उम्र के पेपर मांगे गए इसमें 15 साल उम्र पाई गई। इसके बाद लड़की के परिजनों को थाने ले जाया गया। शादी में आए रिश्तेदारों को भी वापस जाने के लिए कहा गया । घटना घड़साना के गांव 24 एएस (सी) की है।

एनजीओ के प्रदेशाध्यक्ष विमला कवर और प्रदेश उपाध्यक्ष नीता माथुर ने बताया कि उनके पास एक महिला का फोन आया था। महिला ने बताया- घड़साना के गांव 24 एएस(सी) में 15 वर्षीय नाबालिग लड़की का बाल विवाह रविवार को है।

इसके बाद टीम शनिवार को जयपुर से घड़साना पहुंच गई। घड़साना पहुंचकर सूचना की पुष्टि के लिए उन्होंने नाबालिग लड़की के दस्तावेज जुटाए। सूचना की पुष्टि होने पर एनजीओ की टीम घड़साना के थानाधिकारी जितेंद्र स्वामी से मिले। पुलिस टीम को एनजीओ के लोगों ने दस्तावेज दिखाए व नाबालिग के परिवार वाले उम्र के सम्बन्ध में को दस्तावेज पेश नहीं कर सके ।

पटवारी मोतीराम ने बताया कि जब टीम लड़की के घर पहुंची। तब मेहंदी की रस्म चल रही थी। घर में लगभग 60-70 मेहमान घर पर मौजूद थे। इसके बाद मौके पर ही नायब तहसीलदार सुंदर पाल ने कहा- जब तक लड़की बालिग नहीं हो जाती है। तब तक लड़की का विवाह नहीं किया जाएगा। विवाह में काम करने वाले हलवाई, टेंट हाउस और अन्य कारीगरों को भी काम नहीं करने के लिए कहा गया।

एनजीओ की प्रदेशाध्यक्ष विमला कंवर ने बताया कि नाबालिग लड़की की बारात रावला क्षेत्र से आनी थी। इसलिए रावला के थानाधिकारी को भी इस मामले से अवगत करवाया गया, ताकि दूल्हे पक्ष के लोग नियमों की अवहेलना न करें। नाबालिक लड़की ने 10वीं क्लास तक पढ़ ाई कर छोड़ दी थी। अपने परिवार के कहे अनुसार शादी कर रही थी। दूल्हे पक्ष से संपर्क नहीं हो पा रहा है।

जालोर के सिरे मंदिर धाम जाने वाले रास्ते पर खुले पड़े हैं सीवरेज के ढक्कन

जालोर, (कासं)। जालोर में सिरे मंदिर धाम जाने वाले रास्ते को फतेह हिल कॉलोनी से सीवरेज के लिए खोद डाला और पुनः सड़क का निर्माण करने की बजाय सड़क पर लिपापोती कर इतिश्री कर दी । जबकि दिसम्बर माह में सिरे मंदिर धाम के पीर शांतिनाथ महाराज का भण्डारा व महारूद्र यज्ञ का आयोजन होने जा रहा है।

- **खुले गड्ढे से नाथजी के भक्तों को हो रही परेशानी**
- **नगरपरिषद ने सिरे मंदिर जाने वाले मुख्य मार्ग को खोद डाला**

ऐसे में सिरे मंदिर जाने वाले मार्ग पर खड्डे होने के साथ सीवरेज के ढक्कन तक खुले पड़े है। नगरपरिषद के खिलाफ नाथजी के भक्तों में नाराजगी देखी जा रहा है।

जालोर के सिरे मंदिर रोड पर फतेह हिल कॉलोनी बनी हुई है। फतेह हिल कॉलोनी से सीवरेज निकालने के लिए नगरपरिषद की ओर से सिरे मंदिर जाने वाले मुख्य मार्ग को खोद डाला। फतेह हिल कॉलोनी से सीवरेज निकालने के दौरान सड़क को खोदने के करीब पांच - छह माह हो गये, लेकिन ना तो सीवरेज का कार्य पूर्ण हुआ और ना ही क्षतिग्रस्त सड़क की मरम्मत का कार्य हुआ । सड़क पर रेत डालने से उधर से गुजरने वाले लोगों को रेत के गुब्बार का सामना करना पड़ रहा है।

लोगों के अनुसार फतेह हिल के दबाव में नगरपरिषद भी पंगु बना हुआ है। दिसम्बर माह में पीर शांतिनाथ महाराज का तीसरा भण्डारा व महारूद्र यज्ञ का भव्य कार्यक्रम आयोजित होने वाला है। तथा इस मार्ग पर हजारो की संख्या में देश व प्रदेश के नाथजी के भक्त भण्डारा व यज्ञ में शिरकत करने पहुंचेंगे। भण्डारा कार्यक्रम पांच दिन तक चलेगा। ऐसे में सिरे मंदिर जाने वाला मार्ग क्षतिग्रस्त होने से नाथजी के भक्तो को परेशानी का सामना करना पड़ेगा ।

जालोर के सिरे मंदिर रोड़ जाने वाले क्षतिग्रस्त मार्ग पर सीवरेज के गड्ढे खुले पड़े हैं।

नगर परिषद के आयुक्त महिपाल सिंह ने बताया कि सिरे मंदिर जाने वाले मार्ग की मरम्मत को लेकर टेण्डर जारी नहीं किये गये हैं। भण्डारा व यज्ञ के चलते सड़क को रेत डालकर सही किया जायेगा। इसके लिए महंतजी से बात हुई है फिर उनसे मिलकर बात करूंगा।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 31 अक्टूबर, 2022

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2079, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र रात्रि 4:15 तक, धृति योग सांय 4:12 तक, गर करण सांय 4:20 तक, चन्द्रमा दिन 11:24 से मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-धनु, मंगल-मिथुन, बुध-तुला, गुरू-मीन, शुक्र-तुला, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

भद्रा रात्रि 1:12 से मंगलवार दिन 11:08 तक रहेगी। आज कल्पादि और डाला पर्व पर उदयगामी सूर्य को अर्ध्य दिया जायेगा। आज संकल्प दिवस और इन्दिरा गांधी पूण्य तिथि है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: अमृता सूर्योदय से 8:02 तक, शुभ 9:25 से 10:48 तक, चर 1:33 से 2:56 तक, लाभ-अमृत 4:56 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:39, सूर्यास्त 5:41

मेष

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। चलते व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा।

वृष

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ने का भय है। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

मिथुन

व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

कर्क

व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। घर-परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है।

कन्या

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

तुला

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक

व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव हो सकता है और भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

धनु

व्यावसायिक/आर्थिक मामलों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा और व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर

घर-गृहस्थी के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में आपसी वाद-विवाद बढ़ सकते हैं। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

कुंभ

आर्थिक मामलों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा। घर-परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

मीन

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा।